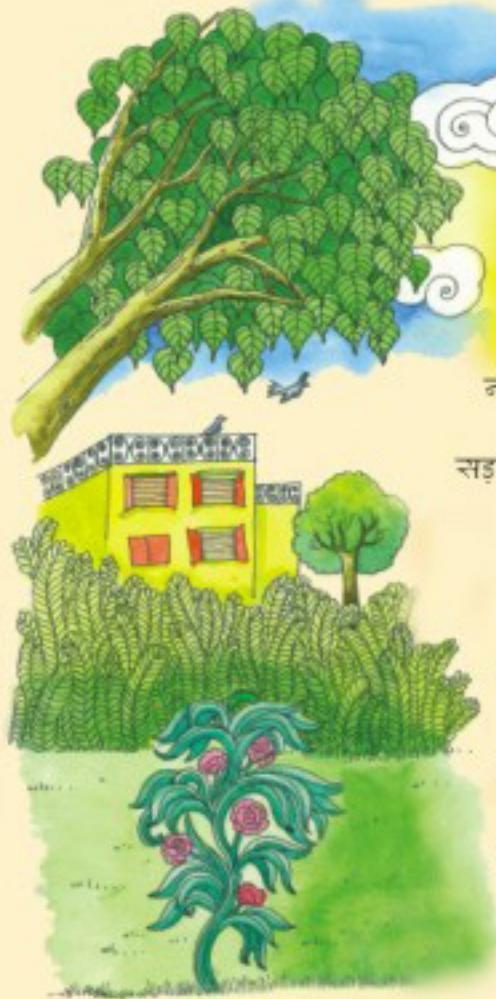


# कि बच्चा स्कूल जा रहा है...



दुआ सवेरा

जमीन पर फिर अदब से आकाश

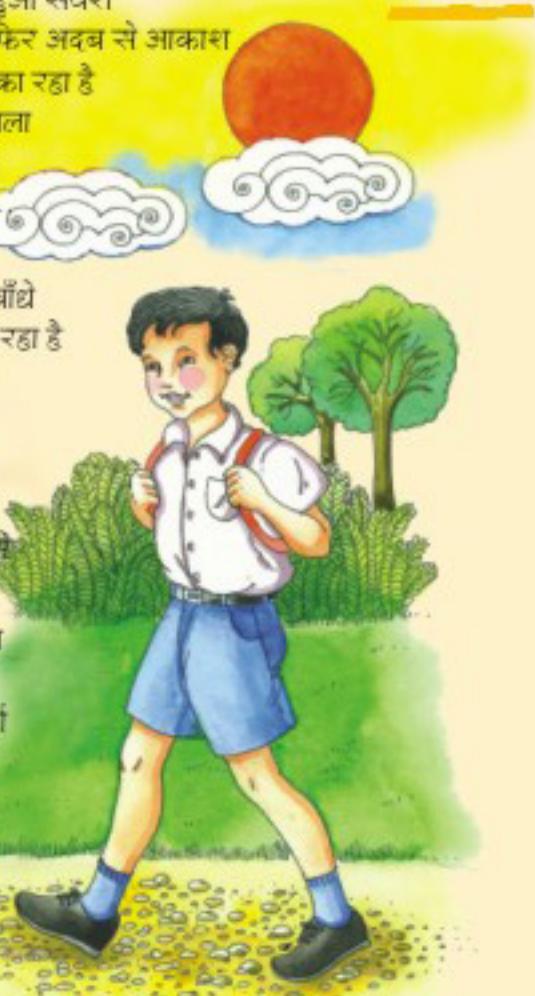
अपने सिर को झुका रहा है

नई किजा में, नया उजाला

तमाम बरती सजा रहा है

कि बच्चा स्कूल जा रहा है...

निदा फाजली



नदी में अस्जान करके सूरज

नूनहरी मलमल की पगड़ी बाँधे

सड़क किनारे ऊँड़ा दुआ मुरुकुरा रहा है

हवाएं सरसब्ज डालियों में

दुआओं के गीत गा रही हैं

महकते फूलों की लोरियाँ

सोते रास्तों को जगा रही हैं

घनेरा पीपल, गली के कोने से

हाथ अपना हिला रहा है

फरिश्ता निकला है रोशनी का

हरेक रस्ता चमक रहा है

ये वक्त वो है जमी का हर जरा

माँ के दिल-ना धड़क रहा है

पुरानी इक छत पे वक्त बैठा

कबूतरों को ऊँड़ा रहा है

कि बच्चा स्कूल जा रहा है

थित्र: सोनाली विस्वास

## पाँच दूहे

सूफी तबस्सुम



पाँच दूहे घर से निकले  
करने चले शिकार  
एक दूहा रह गया पीछे  
बाकी रह गए चार

चार दूहे जोश में आकर  
लगे छाने लीन  
एक दूहे को आई खाँसी  
बाकी रह गए तीन

तीन दूहे उड़कर छौले  
घर को भाग दाली  
एक दूहे ने बाट न मानी  
बाकी रह गए दो

दो दूहे फिर निलकर बैठे  
दोनों ही थे नैक  
एक दूहे को खा गई बिल्ली  
बाकी रह गया एक

एक दूहा जो रह गया बाकी  
कर ली उसने शादी  
बीबी उसकी निली लड़का  
यूँ हुई बर्बादी